शाला संकुल व्यवस्था
के माध्यम से
बच्चों की गुणवत्ता सुधार हेतु कार्ययोजना

शाला संकुल प्राचार्य की डायरी

राज्य परियोजना कार्यालय, समग्र शिक्षा छत्तीसगढ़, रायपुर

1. इस डायरी की आवश्यकता

कार्य के बहुत बड़े क्षेत्र, बड़ी संख्या में शालाओं के होने, प्रशासकीय कार्यों की अधिकता, समयसीमा में किए जाने वाले अन्यान्य कार्य आदि से विकासखंड स्तर पर कार्यरत विकासखंड शिक्षा अधिकारी अपने विकासखंड की शालाओं में अकादमिक गुणवत्ता पर विशेष ध्यान नहीं दे पाते। ऐसे में स्कूलों की संख्या को कम करते हुए कुछ फोकस कार्यों विशेषकर अकादमिक कार्यों की जिम्मेदारी एक विकेन्द्रीकृत व्यवस्था बनाकर दिए जाने की आवश्यकता महसूस की गयी।

इन्ही उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए राज्य में शाला संकुल व्यवस्था लागू की गयी है। शाला संकुल व्यवस्था के माध्यम से सीमित क्षेत्र अर्थात आठ किलोमीटर के दायरे के स्कूल, सीमित संख्या अर्थात अधिकतम दस स्कूलों में केवल अकादमिक उन्नयन की जिम्मेदारी ही शाला संकुल प्राचार्य को सौंपी गई है। इस व्यवस्था के तहत संकुलों की संख्या 2703 से बढाकर 5540 कर दी गयी है। प्रत्येक हाई एवं हायर सेकन्डरी स्कूल को शाला संकुल बनाते हुए शाला संकुल प्राचार्य को उनके क्षेत्र के पूर्व-प्राथमिक से लेकर हायर सेकन्डरी स्तर तक के शालाओं में गुणवत्ता की पूरी जवाबदेही दी गयी है। शाला संकुलों के माध्यम से स्कूलों में गुणवत्ता सुधार हेतु बहुत कुछ किए जाने की आवश्यकता है।

शाला संकुल व्यवस्था के सुचारू संचालन, शाला संकुल प्राचार्यों को उनकी भूमिका से अवगत करवाए जाने, उन्हें अपने संकुल की शालाओं की जमीनी हकीकतों से रूबरू करवाए जाने, प्राथमिकताओं एवं सुधार के क्षेत्रों के निर्धारण, आत्म-चिन्तन एवं समय समय पर किए जा रहे कार्यों की समीक्षा के लिए इस डायरी का उपयोग एक टूल के रूप में किया जा सकेगा। शाला संकुल प्राचार्य इस डायरी में अपने शाला संकुल के लिए लक्ष्यों का निर्धारण, आगामी योजनाओं के बारे में टीप, विभिन्न शालाओं में उपलब्ध भौतिक एवं मानव संसाधन की उपलब्धता, विकास एवं आपस में साझेदारी कर बेहतर उपयोग, कमी के क्षेत्रों की पहचान कर उनमें निरंतर सुधार हेतु उपाय से लेकर और भी बहुत सारे कार्यों को करने हेतु यह डायरी एक साक्षी हो सकेगी।

स्कूल शिक्षा विभाग में बहुत सारी योजनाओं का संचालन होता है। निःशुल्क गणवेश, पुस्तकें, मध्याह्न भोजन से लेकर गणित विज्ञान क्लब, व्यवसायिक शिक्षा, शिक्षक प्रशिक्षण, विभिन्न प्रकार के अनुदानों का वितरण आदि आदि। विभिन्न योजनाओं के जमीनी स्तर पर क्रियान्वयन हेतु शाला संकुल एक बेहतर एवं प्रभावी विकल्प के रूप में सामने लाया गया है। इसके सही तरीके से क्रियान्वयन होने की स्थिति में हमारे राज्य के बच्चों को इस योजना का लाभ अवश्य मिल सकेगा।

हम यह उम्मीद करते हैं कि इस डायरी के बेहतर उपयोग से शाला संकुल प्राचार्य स्कूली शिक्षा में गुणवत्ता लाने की दिशा में अपनी महती भूमिका से न केवल अवगत हो सकेंगे बल्कि अपने संकुल के भीतर की शालाओं में आपसी सामंजस्य, एक दूसरे से मिलकर आपसी साझेदारी से काम करने की प्रवृत्ति का विकास एवं बच्चों की उपलब्धि में सुधार हेतु निरंतर प्रयास हेतु आशातीत सहयोग मिल सकेगा।

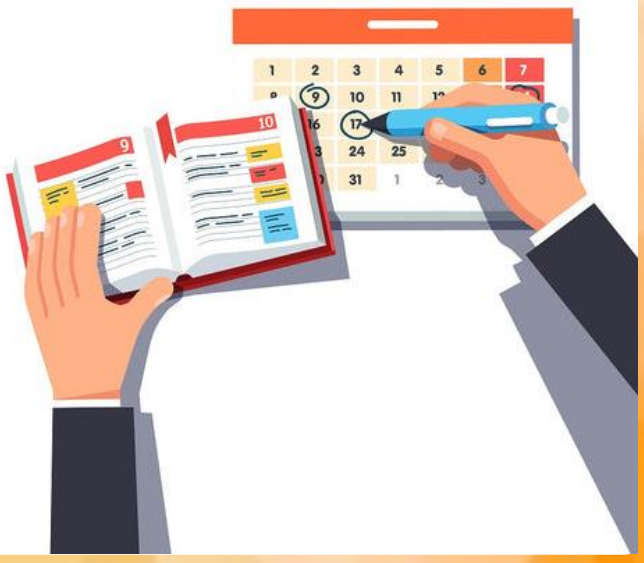

2. शाला संकुल की अवधारणा एवं आवश्यकता क्यों?

स्कूल शिक्षा विभाग में राज्य स्तर पर प्रशासकीय नियंत्रण के लिए लोक शिक्षण संचालनालय (DPI), जिले स्तर पर जिला शिक्षा अधिकारी (DEO) एवं विकासखंड स्तर पर विकासखंड शिक्षा अधिकारी (BEdO) एवं सहायक विकासखंड शिक्षा अधिकारी (ABEdO) कार्यरत हैं। विभाग को अकादमिक समर्थन हेतु राज्य स्तर पर राज्य शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद, जोनल स्तर पर तीन शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, जिले स्तर पर जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (DIET) एवं बुनियादी शिक्षण संस्थान (BTI) संचालित हैं। शिक्षा के लोकव्यापीकरण में विभाग को समर्थन देने हेतु राज्य स्तर पर समग्र शिक्षा राज्य परियोजना कार्यलय, जिले स्तर पर समग्र शिक्षा जिला परियोजना कार्यालय, विकासखंड स्तर पर विकासखंड स्रोत केंद्र एवं संकुल स्तर पर संकुल स्रोत केंद्र संचालित किए जा रहे हैं।

छोटे बच्चों के लिए विभिन्न बसाहटों में आंगनबाडी संचालित हैं जिनका प्रशासकीय नियंत्रण महिला एंव बाल विकास विभाग के पास हैं। आँगनबाडियों में बच्चों की शिक्षा के साथ-साथ स्वास्थ्य एवं अन्य कई मुद्दों पर फोकस होता है। प्राथमिक शालाओं में दो शिक्षक एवं पाँच कक्षाएं होती हैं। उच्च प्राथमिक शालाओं में प्रायः तीन शिक्षक और पाँच छह विषय होते हैं। हायर सेकंडरी में विषय शिक्षकों के अभाव में कई बार निचली कक्षाओं के योग्य शिक्षकों को इन कक्षाओं में अध्यापन के लिए जिम्मेदारी दे दी जाती है। विभिन्न स्तरों पर सभी एक दूसरे को गुणवत्ता में ह्वास के लिए जिम्मेदार बताते हुए ऊपर से नीचे तक आरोप और प्रत्यारोप का दौर चलता है और कोई भी बच्चों के गुणवत्ता के लिए जिम्मेदारी नहीं लेता। (Blame game)

स्कूल शिक्षा विभाग का मुख्य एवं एकमात्र उद्देश्य शालाओं में बच्चों को बेहतर शिक्षा सुविधा प्रदान करना है परन्तु विभिन्न स्तरों पर कार्यरत विभिन्न विभागों द्वारा अपने अपने लिए कुछ चुनिन्दा कार्यों की जिम्मेदारी लेते हुए उन्ही कार्यों के क्रियान्वयन पर अपना पूरा ध्यान केन्द्रित कर कार्य करते हैं। इन सभी विभागों में आपस में भी तालमेल के अभाव से जमीनी स्तर पर कार्यक्रम के क्रियान्वयन के समय हम अपने मुख्य उद्देश्य से भटककर अपना ध्यान कहीं और लगाकर अपनी ऊर्जा का अनावश्यक अपव्यय करने लगते हैं। इन सभी के कार्यों को किसी एक स्तर पर फोकस करते हुए विकेन्द्रित कर लागू करने से हम विभागीय कसावट एवं जिम्मेदारियों का निर्धारण कर बच्चों की उपलब्धि में सुधार लाने की दिशा में प्रयास कर सकते हैं।

कक्षा आठवीं तक शिक्षा का अधिकार लागू है और नो डिटेंशन नीति के चलते किसी भी कक्षा में बच्चों को रोका नहीं जाता। लेकिन इसके पीछे के सच पर हम ध्यान नहीं देते। बच्चे को रोकने का यह मतलब कतई नहीं है कि बिना कुछ सीखे-समझे बच्चे अगली कक्षा में चले जाएं। शिक्षा के अधिकार के अंतर्गत अब प्रत्येक कक्षा एवं विषय के लिए लर्निंग आउटकम निर्धारित कर लिए गए हैं।

लर्निंग आउटकम का मतलब है कि कोई भी बच्चा किसी कक्षा को उत्तीर्ण कर लेता है तो वह उस कक्षा तक के सभी लर्निंग आउटकम को पूरी तरह से आत्मसात कर लेता है, हासिल कर लेता है। जब आप किसी बच्चे के प्रगति पत्रक पर हस्ताक्षर कर रहे होते हैं, तो आप कानूनी तौर पर यह दर्शा रहे हैं कि उस बच्चे को आपने उस कक्षा तक के सभी लर्निंग आउटकम को हासिल करवा लिया है।

बच्चों के गुणवत्ता सुधार संबंधी कार्यों पर विशेष ध्यान देने हेतु शाला संकुल योजना लागू कर उन्हें इस कार्य पर फोकस करते हुए जमीनी स्थिति में सुधार हेतु शाला संकुल प्राचार्यों को विशेष जिम्मेदारियां दी गयी है।

3. शाला संकुल प्राचार्य की जिम्मेदारियां

शाला संकुल प्राचार्य के रूप में मुख्य रूप से निम्नलिखित क्षेत्रों में प्रयास किए जाने होंगे-

1. राज्य, जिला एवं विकासखंड स्तर के स्कूल शिक्षा विभाग के कार्यालयों से संबंधित विभिन्न निर्देशों एवं योजनाओं का अपने शाला संकुल में बेहतर एवं प्रभावी तरीके से क्रियान्वयन
2. समग्र शिक्षा, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान एवं अपने शाला संकुल के कुशल मास्टर ट्रेनर्स/ मेंटर्स के साथ समन्वय कर अपने शाला संकुल में शिक्षकों का सतत क्षमता विकास
3. अपने संकुल की आंगनबाडी, बालवाडी से लेकर हायर सेकंडरी स्तर की सभी शालाओं का अकादमिक नियंत्रण एवं उचित मार्गदर्शन देते हुए निरंतर सुधार हेतु समर्थन देना
4. अपने अधीनस्थ शालाओं में विषयवार शिक्षकों एवं नियमित अध्ययन अध्यापन सुनिश्चित करने आवश्यक व्यवस्थाओं हेतु दिशानिर्देश देना
5. शिक्षकों के प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी बनाकर क्षमता विकास हेतु सोश्यल ग्रुप में सक्रिय रखना
6. प्रतिमाह न्यूनतम सात दिन शालाओं के निरीक्षण के लिए नियत कर सघन निरीक्षण एवं फोलो-अप कार्य
7. शाला संकुल में शैक्षिक कैलेण्डर का निर्धारण कर समय पर पालन सुनिश्चित करना
8. संकुल स्त्रोत समन्वयकों एवं सहायक विकासखंड शिक्षा अधिकारियों के साथ मिलकर शाला निरीक्षण से प्राप्त तथ्यों का नियमित फ़ोलो-अप एवं अकादमिक कसावट की दिशा में मिलकर संयुक्त प्रयास
9. विद्यार्थी हितग्राही योजनाओं को समय पर शत-प्रतिशत क्रियान्वयन की जिम्मेदारी
10. बच्चों में लर्निंग आउटकम की नियमित रूप से ट्रेकिंग एवं उपचारात्मक शिक्षण
11. शिक्षकों के वित्तीय/ प्रशासकीय एवं उनके शिकायतों का समय पर निपटारा करने हेतु आवश्यक पहल
12. सामुदायिक सहयोग से शालाओं में विभिन्न संसाधन लाने हेतु समुचित प्रयास
13. सभी शालाओं में समय पर शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की उपस्थिति के साथ साथ समय का सीखने-सिखाने हेतु अधिकतम उपयोग (time on task)
14. शालाकोश/ यूडाईस/यूडीएस प्रणाली में आंकड़ों का निर्धारित समय में अद्यतीकरण
15. शिक्षक प्रशिक्षण की आवश्यकता का अध्ययन कर ऊपर डाईट में भेजकर प्रशिक्षण के आयोजन में आवश्यक सहयोग करना
16. शाला प्रबन्धन समितियों के सदस्यों का समय समय पर क्षमता विकास कर उनके माध्यम से शाला प्रबन्धन में आवश्यक सहयोग लेना
17. अप्रवेशी, शाला त्यागी एवं लंबे समय से अनुपस्थित बच्चों की पहचान कर विभिन्न नवाचारी प्रयासों एवं उनके लिए सेतु पाठ्यक्रम आयोजित कर आयु अनुरूप कक्षाओं में प्रवेश की दिशा में कार्य
18. बच्चों को स्थानीय भाषा में शिक्षा सुविधा देने आवश्यक संसाधन एवं सुविधा उपलब्ध कराना
19. शिक्षकों को लर्निंग आउटकम आधारित सहायक शिक्षण सामग्री का उपयोग कर अध्यापन करने समुचित व्यवस्थाएं
20. समय पर विभिन्न सुविधाओं जैसे पाठ्य-पुस्तकों, गणवेश एवं सायकल जैसी विभिन्न सुविधाओं का वितरण
21. दिव्यांग बच्चों को समावेशी अथवा आवश्यकतानुसार अन्य सुविधा देने हेतु नवाचारी पहल
22. बालिकाओं की शिक्षा एवं वंचित वर्गों की शिक्षा हेतु आवश्यक योजनाओं का क्रियान्वयन
23. विभिन्न स्तरों पर बच्चों की उपलब्धि में सुधार हेतु समय समय पर फोर्मेटिव, सावधिक एवं समेटिव आकलन को सही तरीके से आयोजन में सहयोग
24. सभी शालाओं में समय समय पर सामाजिक अंकेक्षण एवं सुरक्षा ओडिट कर उससे प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर त्वरित फोलो-अप एक्शन लेकर सुधार लाना

और सबसे महत्वपूर्ण:

25. सभी शालाओं में सभी बच्चों में फाउंडेशनल लिटरेसी एवं न्यूमरेसी (FLN) से संबंधित सभी दक्षताओं को यथाशीघ्र हासिल करवाना

4. शाला संकुल से संबंधित विभिन्न स्तरों पर जॉब चार्ट

4.1 शाला संकुल प्रबन्धन समिति- चूंकि शाला संकुल योजना में उस संकुल के भीतर के सभी शालाएं शामिल होती हैं तो एक ऐसी समिति के माध्यम से इस योजना का क्रियान्वयन किया जाना चाहिए जिसमें सभी अधीनस्थ शालाओं का प्रतिनिधित्व हो। ऐसा करते हुए आप सभी को साथ लेकर चल सकेंगे और सभी शालाओं में आपके निर्देशों का त्वरित पालन संभव हो सकेगा। अपने शाला संकुल के लिए शाला संकुल प्रबन्धन समिति का गठन मुख्य रूप से इन सदस्यों को शामिल कर किया जा सकता है -

- सभी अधीनस्थ शालाओं के प्रधान पाठक/ प्राचार्य
- सभी अधीनस्थ शालाओं में से इस प्रकार से शिक्षकों का चयन कि समिति में सभी शालाओं का प्रतिनिधित्व के साथ-साथ सभी विषयों के कुशल मास्टर ट्रेनर्स भी उपलब्ध हो सके
- शाला प्रबन्धन समिति के सक्रिय सदस्य/ पंचायत प्रतिनिधि
- संकुल शैक्षिक समन्वयक एवं ऍफ़ एल एन कार्यक्रम हेतु चयनित मेंटर्स

इस समिति के माध्यम से विभिन्न मुद्दों पर निर्णय लेते हुए विभिन्न घटकों के क्रियान्वयन हेतु सुझाव एवं क्रियान्वयन में सहयोग दिया जा सकेगा

4.2 संकुल शैक्षिक समन्वयक- ये मुख्य रूप से निम्नलिखित कार्य करते हुए गुणवत्ता में सुधार लाएंगे-

- शाला संकुल में अपनी शाला को आदर्श शाला के रूप में विकसित कर अन्य शालाओं को प्रेरित करना
- शाला संकुल के अन्य शिक्षकों को सहयोग एवं मार्गदर्शन देने हेतु मेंटर के रूप में कार्य करना
- शाला संकुल के विभिन्न शालाओं का माह में कम से कम दो बार निरीक्षण कर शाला संकुल प्राचार्य को सुधारात्मक क्षेत्र एवं बेहतर उदाहरणों से अवगत करना
- अपने शाला संकुल की सभी शालाओं में विभिन्न योजनाओं का त्वरित क्रियान्वयन

4.3 शाला संकुल के विषय विशेषज्ञ शिक्षक/ मेंटर्स- विषय विशेषज्ञ शिक्षकों की मुख्य जिम्मेदारी होगी-

- अपने विषय में बच्चों की स्थिति के आकलन हेतु समय समय पर विभिन्न शालाओं में बच्चों के साथ कार्य
- शिक्षकों से चर्चा एवं उनकी कक्षाओं का अवलोकन कर विभिन्न विषयों में प्रशिक्षण आवश्यकताओं की पहचान कर उसे समग्र शिक्षा जिला कार्यालय एवं डाईट तक पहुंचाना
- शिक्षकों को उनके आवश्यकता एवं मांग के आधार पर प्रशिक्षण देना, प्रशिक्षण को मुख्यतः शालाओं में बच्चों के साथ मिलकर प्रत्यक्ष प्रदर्शन (Demonstration) के आधार पर आयोजित करना

4.4 विकासखंड शिक्षा अधिकारी- सहायक/विकासखंड शिक्षा अधिकारियों की मुख्य जिम्मेदारी होगी-

- शाला संकुल प्राचार्यों को शासन की विभिन्न योजनाओं एवं निर्देशों से अवगत करते रहना
- विकासखंड में शैक्षिक गुणवत्ता सुधार हेतु अपनी अपेक्षाओं एवं निर्धारित लक्ष्यों से अवगत करना
- शालाओं के निरीक्षण से प्राप्त फीडबैक के आधार पर त्वरित एक्शन लेते हुए स्थिति में सुधार लाना
- शिक्षकों की प्रशासकीय समस्याओं का शीघ्र निपटारा करते हुए प्रभावी कार्य संस्कृति विकसित करना

5. शाला संकुल प्राचार्य द्वारा आत्म-चिंतन का अवसर

आपने देखा कि शाला संकुल व्यवस्था क्यों प्रारंभ की गयी है, इसके उद्देश्य क्या हैं और एक शाला संकुल प्राचार्य के रूप में आपके क्या क्या दायित्व हैं। तो चलें इन मुद्दों पर आपके द्वारा अब तक की गयी गतिविधियों के संबंध में थोड़ा रूककर चिंतन कर लेवें।

5.1 जिम्मेदारियों के निर्वहन के संबंध में अद्यतन स्थिति जानने हेतु चेकलिस्ट

#	चेकलिस्ट के बिंदु	स्थिति Y/N
1	क्या आपको शाला संकुल प्राचार्य के दायित्व का अध्ययन कर उसकी पूरी जानकारी है ?	
2	क्या आप शाला संकुल प्राचार्य के रूप में अपने अधीनस्थ शालाओं की नियमित निरीक्षण करने जाते रहते हैं और सुधार हेतु नियमित फोलो-अप एक्शन लेते हैं ?	
3	क्या आप अपने संकुल समन्वयक को प्रतिमाह प्रत्येक स्कूल में कम से कम दो बार जाने हेतु निर्देशित करते हैं और उनके रिपोर्ट पर आवश्यक फोलो-अप एक्शन लेते हैं ?	
4	क्या आपके संकुल में शिक्षकों की मासिक बैठक का आयोजन कर चर्चा पत्र के एजेंडा अनुसार बिन्दुओं पर प्रतिमाह चर्चा करवाई जाती है और उनका क्रियान्वयन होता है?	
5	क्या आप शाला संकुल योजना के माध्यम से अपने शाला संकुल की शालाओं में अकादमिक गुणवत्ता सुधार से संबंधित विभिन्न योजनाओं के क्रियान्वयन में सफल हो पा रहे हैं ?	
6	क्या आप अपने शाला संकुल की समस्त शालाओं में बच्चों एवं शिक्षकों की नियमित उपस्थिति के लिए किए जा रहे प्रयासों से संतुष्ट हैं और उपस्थिति में सुधार हुआ है ?	
7	क्या आपके शाला संकुल में ड्राप-आउट, अनियमित उपस्थिति एवं पलायन की समस्या को दूर करने में काफी सफलता मिल रही है ?	
8	क्या आपने अपने शाला संकुल के सभी शिक्षकों को उनके इच्छा अनुसार पीएलसी में जुड़ने एवं सभी शिक्षकों को टेलीग्राम ग्रुप में जोड़ने में सफलता पा ली है ?	
9	क्या आपने अपने स्कूल के विषय शिक्षकों को अपने अधीनस्थ शालाओं में अपने विषय में बच्चों की स्थिति एवं संबंधित विभिन्न मुद्दों पर नियमित जानकारी लेने एवं सुधार हेतु उन्हें जिम्मेदारी देकर फोलो-अप/क्षमता विकास संबंधी कार्यक्रम आयोजित कर रहे हैं ?	
10	क्या आप शासन की विभिन्न योजनाओं को समय पर सफलतापूर्वक अपने शाला संकुल की सभी शालाओं में लागू कर पा रहे हैं ?	

ऊपर चेक लिस्ट में दिए गए दस बिन्दुओं में यदि आपकी वर्तमान स्थिति NO में हैं तो इस चेकलिस्ट के माध्यम से आप अवगत हो ही गए होंगे कि एक शाला संकुल प्राचार्य के रूप में आपको क्या क्या करना चाहिए। एक अच्छे शाला संकुल प्राचार्य के रूप में आपको धीरे-धीरे उपरोक्त सभी दस बिन्दुओं पर YES लिखने की स्थिति में आ जाना चाहिए। इसके लिए शाला संकुल की पूरी टीम को साथ लेकर चलना होगा।

अपने शाला के समस्त अकादमिक स्टाफ एवं अन्य अधीनस्थ शालाओं के शिक्षकों को अपने शाला संकुल में बच्चों की उपलब्धि में सुधार हेतु सभी आवश्यक प्रयास किए जाने होंगे। इन सबके लिए कुशल लीडरशिप क्वालिटी के साथ-साथ सुनियोजित योजना बनाकर खूब मेहनत करनी होगी। आपके कुशल नेतृत्व में संकुल में सकारात्मक परिवर्तन दिखाई देना चाहिए।

5.2 कोरोना लाकडाउन से आपके संकुल की शालाओं में हुआ नुकसान

आप इस बात से सहमत होंगे कि कोरोना की वजह से विभिन्न क्षेत्रों में बहुत नुकसान हुआ है। अपने संकुल की शालाओं में कार्यरत शिक्षकों एवं विद्यार्थियों से चर्चा कर एवं आपके द्वारा स्वयं अनुभव किए गए बिन्दुओं को सोच-समझकर लिखें।

1. बच्चों में बेसिक जानकारी का अभाव स्पष्ट दिखाई दे रहा है एवं लेखन कौशल कमजोर हो गया है
2. बच्चों की उपस्थिति में बहुत कमी आई है और बच्चे लंबी अवधि तक कक्षा में नहीं बैठ रहे हैं
3. .....
4. .....
5. .....
6. .....
7. .....
8. .....
9. .....
10. .....

5.3 कोरोना लाकडाउन से आपके संकुल की शालाओं में हुए नुकसान की भरपाई के लिए किये गए प्रयास

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

5.4 मेरे शाला संकुल में विभिन्न योजनाओं के क्रियान्वयन में आने वाली प्रमुख चुनौतियां एवं सुधार हेतु उपाय

अभी तक आपके शाला संकुल में विभिन्न योजनाओं के क्रियान्वयन में आपको जो जो चुनौतियां अनुभव में आई हैं, उन पर चिंतन कर उन्हें आपने कैसे दूर किया, कम किया या आगे इन चुनौतियों का सामना कैसे करेंगे, इस सबके बारे में आपको सोच-समझकर लिखना होगा-

#	योजनाओं के क्रियान्वयन में मुख्य चुनौतियां	सुधार हेतु उपाय
1	विभिन्न निर्देशों को शाला संकुल के सभी शिक्षकों तक तत्काल पहुंचाना एवं उनसे जानकारी लेना	सभी शिक्षकों को अनिवार्यतः टेलीग्राम ग्रुप में जोड़कर सक्रिय रहने हेतु प्रेरित किया
2	शिक्षकों को विभिन्न मुद्दों पर प्रशिक्षण की आवश्यकता दिखाई दी	विषय विशेषज्ञ शिक्षकों को पीएलसी बनाकर उन्हें नेतृत्व देने का अवसर देते हुए सतत क्षमता विकास हेतु प्रेरित किया
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		

समय समय पर आपके द्वारा किए जा रहे अनुभवों को उपरोक्त टेबल में प्रविष्ट किया जाना सुनिश्चित करें। इसे अपने अन्य साथियों के साथ भी उचित अवसर पर साझा करें ताकि विभिन्न चुनौतियों का सफलतापूर्वक कैसे सामना किया जाए, इसकी जानकारी मिल सके।

5.5 NAS एवं ASER Survey रिपोर्ट्स में सुधार हेतु आपके द्वारा किए जा रहे विभिन्न प्रयास

NAS में बच्चों से सोचकर समझकर चिंतन कर उत्तर देने वाले सवाल दिए जाते हैं। बच्चों को रटकर उत्तर देने वाले सवाल इन परीक्षा में नहीं पूछे जाते। असर सर्वे में मूलभूत दक्षताओं जसे पढ़ना एवं गणित में गिनती, जोड़-घटाव एवं भाग के सवाल पूछे जाते हैं। एक सर्वे में बच्चों में मूलभूत दक्षताओं के होने की अपेक्षा की जाती है और वहीं दूसरे सर्वे अर्थात NAS सर्वे में हायर ऑर्डर थिंकिंग वाले प्रश्न पूछे जाते हैं। इन दोनों प्रकार के टेस्ट में आपके संकुल के बच्चों को तैयार करने, बेहतर प्रदर्शन करने हेतु आपकी ओर से क्या उपाय किये जा रहे हैं-

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

5.6 अपने शाला संकुल को प्रभावी बनाए जाने हेतु कुछ सुधारात्मक उपाय

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

6. शाला संकुल योजना के परिप्रेक्ष्य में संकुल समन्वयकों की बदली हुई भूमिका

संकुल समन्वयकों को अपने संकुल के अन्य शिक्षकों के लिए मेंटर की भूमिका निभानी होगी अर्थात वे उन्हें आवश्यकतानुसार कोच करने के साथ-साथ बेहतर कक्षा-अध्यापन हेतु आवश्यक मार्गदर्शन भी देते रहेंगे। संकुल समन्वयकों को अपने कार्य-व्यवहार में निम्नलिखत बदलाव लाए जाने होंगे-

1. संकुलों की संख्या पूर्व से दुगुनी होने की स्थिति में सभी संकुल समन्वयकों को अपनी शाला में अध्यापन के साथ-साथ ही समन्वयक की जिम्मेदारी लेनी होगी
2. संकुल समन्वयक अंब केवल निर्देश देकर कार्य करवाए जाने की जिम्मेदारी को बदलकर सबसे पहले स्वयं अपनी शाला में बेहतर कार्य करते हुए उन्हें अपने आसपास की अन्य शालाओं के लिए स्वयं को एक आदर्श रूप में प्रस्तुत की जा सकेगी। उन्हें अन्य शालाओं के लिए प्रेरक बनकर दिखाना होगा
3. संकुल समन्वयकों का कार्य प्रशासनिक से हटाते हुए पूर्णतः अकादमिक की ओर ले जाना होगा
4. संकुल के प्रत्येक शिक्षक को संकुल की बैठकों के इस प्रकार से आमंत्रित किया जाए कि शालाएं कम से कम प्रभावित हो। इन बैठकों को आनलाइन स्वरूप में परिवर्तित कर ब्लेंडेड माध्यम का उपयोग किया जाए। एक एक एजेंडा को समझाने एवं चर्चा हेतु एक एक शिक्षक का चयन कर उन्हें तैयारी कर प्रस्तुतीकरण के लिए जिम्मेदारी देवें ताकि सभी का सक्रिय सहयोग इन बैठकों के दौरान लिया जा सके
5. अलग अलग माह में संकुल स्तरीय बैठक का आयोजन करने की जिम्मेदारी अलग अलग शालाओं को देते हुए शिक्षकों को उन शालाओं का अवलोकन कर अपनी प्रतिक्रिया देवे एवं बेस्ट अभ्यासों को साझा किए जाने का अवसर देवें
6. संकुल समन्वयकों को इस बात की जानकारी होनी चाहिए कि कौन सी शालाएं बेहतर प्रदर्शन कर रही हैं और किन शालाओं में किन क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता है
7. शालाओं में प्रदत्त संसाधन का उपयोग प्रत्येक बच्चे के विकास के लिए हो सके, इस बात पर विशेष ध्यान देना होगा। सीखने के लिए आसपास उपलब्ध अधिकतम संसाधनों का उपयोग करना होगा
8. संकुल समन्वयक अपने शालाओं के प्रधानाध्यापकों के माध्यम से शिक्षकों का अधिकतम समय कक्षा अध्यापन में ही लगाया जाना सुनिश्चित करते हुए अधिक से अधिक समय Time on task के लिए लगाते हुए बच्चों के अधिगम स्तर में सुधार के लिए सतत प्रयत्नशील रहेंगे
9. प्रत्येक कक्षा में प्रत्येक विषय के लिए लर्निंग आउटकम का प्रदर्शन कर उनके आधार पर ही शिक्षण का कार्य करना होगा। शाला के आसपास प्रिंट-रिच वातावरण बनाकर प्रदर्शित करना होगा
10. प्रत्येक शाला में प्रतिदिन प्रधान अध्यापक के साथ सभी शिक्षक बैठकर पाँच मिनट के लिए अपने कक्षा अध्यापन की समीक्षा करने की परंपरा प्रारंभ की जाए। इसमें मुख्य रूप से मैं अपनी कक्षा में ..... Learning Outcome पर काम कर रहा हूँ और मुझे ..... पढ़ाने में कुछ समस्या आ रही है। आपसे ..... क्षेत्र में सहयोग की अपेक्षा है। ..... बच्चे पर विशेष ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है, इस प्रकार से सभी शिक्षकों को आपस में बैठकर चर्चा कर टीम भावना से काम किया जाना होगा

सभी संकुल समन्वयकों से अपेक्षा है कि वे उपरोक्त सभी बातों को अपने संकुल की सभी शालाओं में अनिवार्यतः किया जाना सुनिश्चित करेंगे। इस हेतु शाला संकुल के प्राचार्य नियमित समीक्षा करते हुए आवश्यक सहयोग प्रदान करेंगे। संकुल समन्वयक अपने संकुल प्राचार्य को प्रत्येक शाला में हो रहे कार्यों की जानकारी देंगे और उनके स्तर पर की जाने वाली कार्यवाहियों की अनुशंसा एवं अनुरोध कर स्थिति में सुधार की दिशा में मिलकर कार्य करेंगे।

7. शाला संकुल से संबंधित मूलभूत जानकारियों का संकलन

7.1 शाला संकुल के भीतर की सभी शालाओं की जानकारी

यू-डाइस कोड	शाला का नाम	स्तर (AW/BW/PS/UPS/ HS/HSS)	कुल विद्यार्थी	कुल शिक्षक	शाला प्रमुख का नाम	मोबाइल नंबर

7.2 शाला संकुल की शालाओं की विशेषताएं / सुधार के क्षेत्र

संकुल की शालाओं का नियमित भ्रमण एवं अवलोकन करने पर आपको प्रत्येक शाला के सकारात्मक पहलू एवं ऐसे पहलुओं की पहचान हो जाती है जिसमें आवश्यक सुधार करने की आवश्यकता है। किसी शाला में बाहरी वातावरण बहुत ही आकर्षक है, किसी में सामुदायिक सहभागिता बहुत ही अच्छी है जबकि किसी शाला में शिक्षक अक्सर विलंब से आते हैं, किसी में बच्चों की उपलब्धि बहुत ही कमजोर है। ऐसे तमाम क्षेत्रों की पहचान कर उसकी जानकारी आप अपने डायरी में स्पष्ट लिखकर बेहतर क्षेत्रों को अन्य शालाओं में लेकर विस्तृत करना एवं खराब पहलुओं में सुधार के लिए निरंतर प्रयास करना होगा।

#	शाला का नाम	प्रमुख विशेषताएं	क्षेत्र जिनमें सुधार किया जाना है
1			
2			

3			
4			
5			
6			
7			
8			
9			
10			
11			
12			

7.3 शाला संकुल में उपलब्ध विशेष प्रतिभावान शिक्षकों का विवरण

शाला संकुल प्राचार्य के पास अपने संकुल के विशेषज्ञ शिक्षकों की सूची एवं विवरण होना चाहिए ताकि जब किसी विशेष क्षेत्र में कोई योजना बनाई जानी हो तो वे इन विशेषज्ञ शिक्षकों का उपयोग कर सके।
विशेष क्षेत्रों में विभिन्न विषयों में विशेषज्ञ शिक्षक जो विषय आधारित पीएलसी में भी सक्रिय हो, चित्रकला, गायन, वादन, अभिनय, लोककला, लेखन, बाल साहित्य निर्माण, सामुदायिक सहभागिता में विशेषज्ञ, टेकनोलोजी में विशेषज्ञ शिक्षक, योजना निर्माण, शोध एवं सर्वे कार्य में रुचि लेने वाले शिक्षक, पाठ्य-पुस्तक लेखन, शिक्षक प्रशिक्षण में विशेषज्ञता जैसे विभिन्न क्षेत्रों में विशेषज्ञ शिक्षकों की जानकारी डायरी में लिखकर रखें-

क्र.	शिक्षक का नाम	शाला का नाम	पद	विशेषज्ञता क्षेत्र का नाम	मोबाइल नम्बर
1.					
2.					
3.					
4.					
5.					
6.					
7.					
8.					
9.					
10.					
11.					
12.					
13.					
14.					
15.					
16.					
17.					
18.					
19.					
20.					
21.					
22.					
23.					
24.					
25.					

8. शाला संकुल में गुणवत्ता सुधार हेतु विशेष फोकस के क्षेत्र एवं कार्यक्रम

शाला संकुल प्राचार्य के रूप में आपको अपने संकुल की शालाओं में गुणवत्ता सुधार हेतु कुछ विशेष कार्यक्रमों को ध्यान में रखकर कार्य करने होंगे। इनमें से कुछ इस प्रकार हैं-

8.1 मूलभूत साक्षरता एवं गणितीय कौशल विकास पर फोकस

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत सबसे पहला लक्ष्य जिसे हमें प्राप्त करना है वह है- Foundational Literacy & Numeracy (FLN)। इस कार्यक्रम के अंतर्गत सभी बच्चों में कक्षा तीन तक के मूलभूत भाषाई एवं गणितीय कौशल हासिल हो जाने चाहिए। बच्चों को उनके स्तर के अनुरूप समझ कर पढ़ना, पढने के लिए एक निर्धारित गतिसीमा का पालन करना, गणित के सवाल आसानी से समझ के साथ हल कर पाना आदि जो निपुण भारत के अंतर्गत तय लक्ष्यों को बेहतर गुणवत्ता के साथ प्राप्त कर सकते हैं। सत्र के प्रारंभ में शुरुआती तीन माह के लिए अर्थात नब्बे दिनों के लिए शाला प्रवेश कार्यक्रम लागू कर नींव को मजबूत करना होगा। बच्चों को उनके स्थानीय भाषा में सीखने में आवश्यक सहयोग देना होगा।

आप अपने शाला संकुल में FLN के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए क्या करेंगे?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

8.2 मुस्कान पुस्तकालय का बेहतर उपयोग

प्रत्येक शाला में बच्चों को पढने के लिए पुस्तकें क्रय कर उपलब्ध करवाई जाती है। फिर भी कुछ सर्वे में यह बात सामने लाई गयी है कि बहुत सी शालाओं में अभी भी पुस्तकालय नहीं है। सबसे पहले यह देखना होगा कि पुस्तकालय के लिए प्रतिवर्ष उपलब्ध करवाई जा रही सभी पुस्तकें सभी शालाओं में पहुंचें। पुस्तकालय में सभी पुस्तकों को व्यवस्थित करते हुए उन्हें बच्चों को नियमित पढने देने की सुविधा बच्चों के समूह के माध्यम से दिया जाए। पुस्तकें बच्चों के आसान पहुंच में होनी चाहिए और बच्चों में पढने में रुचि विकसित करनी चाहिए। शालाओं को मुस्कान पुस्तकालय को आकर्षक रूप से सजाने हेतु भी प्रोत्साहित करना चाहिए। प्रत्येक कक्षा को सप्ताह में पुस्तकालय संबंधी कालखंड का अवसर मिलना चाहिए। स्थानीय स्तर पर भी सामग्री निर्माण कर उन्हें पुस्तकालय में उपयोग करने का अवसर देना चाहिए। बच्चों को पुस्तकें पढने के आधार पर कुछ रोचक गतिविधियों का आयोजन करने का अवसर देना चाहिए।

आप अपने शाला संकुल की शालाओं में मुस्कान पुस्तकालय के बेहतर उपयोग के लिए क्या करेंगे?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

8.3 विज्ञान के प्रयोगों का नियमित आयोजन

विभिन्न विषयों में बेहतर समझ के लिए, उनकी अवधारणाओं को बेहतर तरीके से समझाने के लिए विभिन्न प्रयोगों को अच्छे से समझाये जाने की आवश्यकता होती है। हमारी शालाओं में शिक्षक आमतौर पर प्रयोगों के प्रदर्शन से कतराते हैं। प्रयोगशालाओं का बहुत कम उपयोग होता है। प्रयोगशाला सहायकों को प्रयोग प्रदर्शन का अपेक्षित अनुभव नहीं होता। उनके लिए विशेष प्रशिक्षणों का भी अभाव होता है। प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर पर प्रयोगों को कक्षा के भीतर अथवा बाहर करके दिखाना होता है। ऐसे में शाला संकुल प्राचार्य के रूप में आपको अपने सभी शालाओं में विभिन्न विषयों को गतिविधि-आधारित एवं प्रयोग-प्रदर्शन विधि का उपयोग करके सीखने में सहयोग करवाना अत्यंत आवश्यक है।

आप अपने शाला संकुल की शालाओं में विज्ञान के प्रयोगों के नियमित आयोजन हेतु क्या करेंगे?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

8.4 शाला अनुदानों का बेहतर एवं प्रभावी उपयोग

शालाओं को विभिन्न महत्वपूर्व एवं आवश्यक कार्यों के लिए अनुदान प्राप्त होते रहते हैं। इन अनुदानों का समय पर सार्थक उपयोग हो, इसे सुनिश्चित करना अत्यंत आवश्यक है। प्रत्येक शाला की आवश्यकता अलग अलग होती है। उसी प्रकार आपको यदि मालूम हो कि प्रति वर्ष आपको किन किन कार्यों के लिए कितना अनुदान मिल सकेगा, उसके आधार पर आप आगामी लंबी अवधि की योजना भी बना सकते हैं। बस्तर जिले के लोहंडीगुडा विकासखंड के सभी शालाओं ने मिलकर आदिवासी बच्चों के अभिव्यक्ति कौशल के विकास हेतु साउंड सिस्टम खरीदा ताकि प्रार्थना के दौरान बच्चे विभिन्न प्रस्तुति दे सके।

आप अपने शाला संकुल में शाला अनुदानों के बेहतर उपयोग के लिए क्या करेंगे?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

8.5 प्रिंट-रिच वातावरण का निर्माण

शालाओं एवं गावों में प्रिंट-रिच वातावरण का बहुत अधिक महत्व होता है। बच्चों को इन प्रिंट को देखकर समझकर पढने के लिए सीखने के लिए प्रोत्साहित करना अत्यंत आवश्यक होता है। कई बार कई महत्वपूर्ण चीजें हमारे आसपास होने के बावजूद हमारी नजर उस ओर नहीं जा पाती। ऐसे में बच्चों को अपने आसपास से सीखने के लिए प्रेरित करना एवं शिक्षकों को इस बात के लिए जागरुक करना अत्यंत आवश्यक है। यदि बच्चे इन प्रिंट-रिच से नहीं सीख रहे हैं तो इनका कोई महत्व नहीं है। गत वर्ष हमने शाला सुरक्षा से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर पोस्टर्स बनाकर सभी स्कूलों को उपलब्ध करवाए हैं। इनका छोटे-छोटे समूह बनाकर अध्ययन और अपने साथियों को इन पोस्टर को समझाने की गतिविधि करवाने से बच्चों को पोस्टर के माध्यम से दिया जाने वाला संदेश आसानी से पहुंचाया जा सकता है। राज्य परियोजना कार्यालय द्वारा विभिन्न कक्षाओं के लिए सीखने के लिए सजावट के नाम से ई-पुस्तकें तैयार की गयी हैं। प्रत्येक प्रिंट-रिच के नीचे इसके माध्यम से कौन कौन से लर्निंग आउटकम सिखाने जाने में सहयोग मिलेगा, उसे भी लिखना चाहिए।

आप अपने शाला संकुल में प्रिंट-रिच वातावरण बनाकर सीखने में सहयोग कैसे ले सकेंगे ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

8.6 टेक्नोलोजी का बेहतर उपयोग

सीखने-सिखाने में टेक्नोलोजी का भी बहुत अधिक महत्व है। हमारी बहुत सी शालाओं मे शिक्षकों ने समुदाय के सहयोग से स्मार्ट कक्षाएं बनाकर उनके माध्यम से सीखने में सहयोग लिया जा रहा है। हमारे स्कूलों में टेली-प्रेक्टीज एवं निक्लर एप्प का उपयोग भी कर हम अपने कार्यों को आसान कर सकते हैं। स्कूलों को इस वर्ष इंटरनेट के लिए भी बजट दिया जा रहा है। प्रतिदिन हम बच्चों को सुनाने के लिए कहानियों की श्रंखला भी भेजते रहे हैं। आनलाइन में भी बच्चों के लिए बहुत सी कहानियाँ उपलब्ध है। इन सभी का नियमित उपयोग करते रहने हेतु शिक्षकों को प्रेरित करते रहना चाहिए।

आप अपने शाला संकुल के स्कूलों में टेक्नोलोजी के बेहतर उपयोग के लिए प्रेरित कैसे करेंगे?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

8.7 सुघ्घर पढ़वईया कार्यक्रम

यह कार्यक्रम हाल ही में शुरू किया गया है। इस कार्यक्रम में ऐसी शालाएं जिन्हें यह लगता है कि उनके सभी बच्चे बहुत अच्छा कर रहे हैं और इस कार्यक्रम के लिए निर्धारित मापदन्डों को वे थोड़ी मेहनत करके पूरा कर सकते हैं, उन्हें पोर्टल में जाकर चुनौती देनी होती है। चुनौती देने वाले स्कूलों को उनकी मांग पर आधारित प्रशिक्षण आदि प्राप्त करने की सुविधा मिल जाती है। इन स्कूलों में निकट के विकासखंड के अन्य अधिकारी या इच्छुक शिक्षक जाकर प्रत्येक बच्चे का आकलन कर यह सुनिश्चित करते हैं कि उस स्कूल के बच्चों को सभी दक्षताओं में महारत हासिल है। बच्चों के प्रतिशत के आधार पर उन्हें प्लेटिनम, गोल्ड अथवा सिल्वर सर्टिफिकेट्स प्राप्त होते हैं।

अपने शाला संकुल में अधिकतम स्कूल इस चुनौती को स्वीकार कर तैयारी कर सकें, इस पर विशेष ध्यान दिया जाना होगा और अपने सभी स्कूलों को इस क्रायटेरिया में लाने का प्रयास करना होगा।

आप अपने शाला संकुल के सभी शालाओं को सुघ्घर पढ़वईया कार्यक्रम में कैसे जोड़ेंगे ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

8.8 शालाओं में नियमित उपस्थिति एवं ड्राप-आउट रोकने हेतु सार्थक प्रयास

कोरोना के बाद अपने महसूस किया होगा कि बच्चों की नियमित उपस्थिति में काफी कमी आई है। बच्चे पूरे समय कक्षा में ध्यान देकर बैठने में असहज महसूस करने लगे हैं। उनमे अनुशासन में भी कमी दिखाई दे रही है। पालक भी रोजगार की तलाश में पलायन करते हैं तो बच्चों को अपने साथ लंबे समय के लिए बाहर ले जाते हैं। शालाओं में आमतौर पर प्रतिदिन की औसत उपस्थिति लगभग सत्तर प्रतिशत के आसपास ही होती है। ऐसे में बच्चे बहुत सी महत्वपूर्ण जानकारियों को ग्रहण नहीं कर पाते। सभी बच्चों का सीखना सुनिश्चित करने हेतु नियमित उपस्थिति एवं ड्राप-आउट को रोकने हेतु कुछ सार्थक प्रयास किए जाने की आवश्यकता है।

आप अपनी शाला संकुल के सभी शालाओं में शत-प्रतिशत नियमित उपस्थिति एवं ड्राप-आउट रोकने हेतु क्या-क्या उपाय करना चाहेंगे ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

8.9 मासिक चर्चा पत्र का पठन और उसके आधार पर स्कूलों में गतिविधियों का आयोजन

राज्य से प्रतिमाह cgschool.in पर एक तारीख को चर्चा पत्र का नवीन अंक अपलोड हो जाता है। इसके साथ ही इसका पोडकास्ट भी अपलोड होता है। जिन्हें चर्चा पत्र अपने मोबाइल से पढने में दिक्कत होती है वे इसका पोडकास्ट भी सुन सकते हैं। चर्चा पत्र पर काम हुआ हो तो हमारे साथी उसका वीडियो बनाकर प्रमाण के रूप में भेजते हैं। इन वीडियों के आधार पर माह के अंत तक उस अंक का चर्चा पत्र टीवी भी सामने आता है। सभी शिक्षकों से यह अपेक्षा होती है कि वे स्वयं इसे वेबसाईट में जाकर डाउनलोड करें एवं पढ़कर स्कूलों में इसे लागू करें। शाला संकुल प्राचार्य के रूप में अपने संकुल के सभी शिक्षकों द्वारा इसका अध्ययन एवं उपयोग सुनिश्चित कर संकुल में अकादमिक गुणवत्ता सुधार लाने में काफी मदद मिल सकती है।

आप अपने शाला संकुल में सभी शिक्षकों को चर्चा पत्र डाउनलोड कर पढने एवं उनके अपनी शाला में उपयोग हेतु कैसे प्रेरित करेंगे ?

.....

.....

.....

.....

.....

9. उपचारात्मक शिक्षण हेतु मिशन लर्निंग आउटकम कम्पलीशन

"हमारी शालाओं में बच्चों की उपलब्धि में कोरोना से हुए नुकसान की भरपाई के लिए लर्निंग रिकवरी कार्यक्रम के अंतर्गत प्रत्येक कक्षा के लिए निर्धारित लर्निंग आउटकम को उसी कक्षा में रहते हुए अगली कक्षा में जाने से पहले प्रत्येक बच्चे में प्राप्त करने हेतु मिशन मोड़ में समयसीमा के भीतर रहकर कार्य करने हेतु एक महती योजना"
इस कार्यक्रम के अंतर्गत मुख्य रूप से निम्नलिखित घटक हैं जिससे समय पर सुधार लाया जा सके-

9.1 बेसलाइन एवं एंडलाइन आकलन:

- विभिन्न दक्षताओं को आधार मानकर पन्द्रह प्रश्नों के साथ प्रश्नपत्रों का निर्माण
- उत्तरों के आधार पर तीन स्तरों का निर्धारण- शुरुआती स्तर (beginner level)/ कक्षा से निचले स्तर पर (below class level-BCL)/ कक्षा अनुरूप स्तर (Class-appropriate level- CAL)
- बेसलाइन रिपोर्ट के आधार पर सुधार हेतु रणनीतियों का निर्धारण कर सुधार हेतु फोकस क्षेत्रों में प्रयास
- प्रति उत्तर पुस्तिका के आकलन हेतु शिक्षकों को मानदेय का प्रावधान
- उत्तर पुस्तिकाओं को सेम्पल चेक करने का प्रावधान

9.2 विषय-आधारित प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी:

- विभिन्न विषयों के लिए जिले स्तर पर विषय आधारित पीएलसी का गठन
- पीएलसी के माध्यम से सोशियल मीडिया में विषय से संबंधित अवधारणाओं पर समझ विकसित करना
- एक दूसरे से सीखने हेतु एक बेहतर एवं प्रभावी प्लेटफोर्म की सुविधा उपलब्ध करवाना
- अपने सभी विषय शिक्षकों को पीएलसी में सक्रिय रखना
- मासिक बैठकों में सभी संबंधित शिक्षकों को भेजना एवं चर्चा पत्र के आधार पर क्रियान्वयन रणनीति
- जिले स्तर पर पीएलसी के नाम के लिए {District Name} {Subject Name} (level- UPS/HSS) PLC के अनुरूप लिखा जाना होगा

9.3 स्मार्ट कक्षाओं के माध्यम से आनलाइन कक्षाओं का आयोजन:

- प्रत्येक जिले में प्रमुख विषयों के लिए दस-दस कुशल स्रोत व्यक्तियों का चयन
- स्रोत व्यक्तियों द्वारा विशेष प्रविधियों का इस्तेमाल कर interactive approach से कक्षाओं का आयोजन
- शाला में उपलब्ध शिक्षक आनलाइन शिक्षक से मिलकर टीम टीचिंग पद्धति को बढ़ावा देना एवं शाला के शिक्षकों के साथ अन्तःक्रिया करते हुए सीखने में सहयोग देना
- प्रत्येक आनलाइन कक्षा लेने वाले स्रोत व्यक्ति को ₹ 450/- प्रति कक्षा की दर से DEO द्वारा भुगतान

9.4 विशेष कोचिंग कक्षाओं का संचालन:

- प्राचार्य को अपने शाला में आवश्यकता के आधार पर विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों में विशेष कोचिंग की व्यवस्था
- शिक्षकों की कमी की स्थिति में शाला समय अन्यथा शाला समय से अतिरिक्त समय में कोचिंग कक्षाओं का संचालन
- कोचिंग कक्षाओं में अध्यापन कर रहे शिक्षकों को उनके विद्यार्थियों में एंडलाइन परिणामों में आशातीत सुधारों के आधार पर मानदेय का प्रावधान
- विशेष कोचिंग कक्षाओं के निरीक्षण एवं प्रतिदिन उपस्थिति की फोटो अपलोड के आधार पर भुगतान
- CGCOACHINGINSPECTION App को आपको गूगल प्ले स्टोर से डाऊनलोड करना होगा
- इस एप्प के उपयोग हेतु आप हेल्प वीडियो भी देख सकते हैं
- प्रति विद्यार्थी नियमित उपस्थिति के आधार पर प्रतिमाह ₹ 50/- के मान से 3 माह के लिए ₹ 150/- के बजट का प्रावधान

9.5 शिक्षकों का क्षमता विकास:

उपचारात्मक शिक्षण लागू किये जाने हेतु शिक्षकों का विभिन्न आवश्यक मुद्दों पर क्षमता विकास आवश्यक है। इस हेतु राज्य स्तर पर माध्यमिक शिक्षा मंडल के सहयोग से निर्मित पठन सामग्री पर आधारित प्रशिक्षण जिलों में विभिन्न विषयों से संबंधित मास्टर ट्रेनर्स को उपलब्ध करवा दिया गया है। इन मास्टर ट्रेनर्स के सहयोग से विषय शिक्षकों को आगे का प्रशिक्षण दिया जाना होगा। इन प्रशिक्षणों में आपको अपने संकुल की आवश्यकताओं के अनुसार कुछ और सामग्री जोड़ने की सुविधा भी दी जा सकेगी। क्षमता विकास कार्यक्रम में सभी शिक्षकों की समय पर पूरी उपस्थिति, प्रत्येक शिक्षक की सक्रिय सहभागिता एवं स्व-अध्ययन आदि हेतु प्रेरित करना होगा। क्षमता विकास हेतु विभिन्न क्षेत्रों का निर्धारण भी करते हुए भी स्थानीय स्तर पर प्रशिक्षण डिजाइन करना होगा।

क्षमता विकास हेतु प्रति शिक्षक ₹ 900/-के बजट का प्रावधान किया गया है।

9.6 विद्यार्थियों के लिए अभ्यास पुस्तिकाएं:

कक्षा छठवीं से बारहवी के विद्यार्थियों के लिए लिखित अभ्यास हेतु अभ्यास पुस्तिकाओं को उपलब्ध करवाया जा रहा है। विद्यार्थियों को इन अभ्यास पुस्तकाओं पर शिक्षक के सुपरविजन में कार्य करना होगा। अधिकांश अभ्यास पुस्तिकाओं पर कार्य घर पर रहकर करना होगा ताकि शाला समय का उपयोग सीखने-सिखाने में किया जा सके। इन अभ्यास पुस्तिकाओं पर बच्चों द्वारा किये गए कार्यों को समय समय पर जाँच कर उस पर फीडबैक देना अत्यंत आवश्यक है ताकि सुधार किया जा सके। जिन बच्चों की हेंडराईटिंग में सुधार लाना है उन्हें भी अभ्यास पुस्तिकाएं देकर हस्तलेख सुधार लाने की दिशा में प्रयास करना होगा।

9.7 शालाओं को इंटरनेट सुविधा:

प्रत्येक शाला को आनलाइन सन्दर्भ सामग्री देखने एवं विभिन्न एप्प आदि का उपयोग करने हेतु इंटरनेट के रिचार्ज की सुविधा दी जा रही है। इसके तहत प्रत्येक शाला को कक्षा 6 वीं से 8 वीं तक के लिए ₹ 2800/- एवं कक्षा 9 वीं से 12 वीं तक के लिए ₹ 2500/- के बजट का प्रावधान किया गया है। इस मद से शालाओं में निम्नलिखित कार्य करवाए जा सकते हैं-

- शिक्षकों को हॉट-स्पॉट देते हुए विभिन्न सन्दर्भ सामग्री ढूंढकर कक्षा में उपयोग
- स्मार्ट कक्षाओं में बच्चों को आनलाइन सामग्री देखने एवं उपयोग की सुविधा देना
- टेली-प्रेक्टीज एवं निक्लर एप्प का उपयोग करने के अवसर देना
- विभिन्न आनलाइन प्रशिक्षण में शिक्षकों की सहभागिता लेना

9.8 आकलन हेतु टेली-प्रेक्टीज एवं निक्लर एप्प:

प्रत्येक शाला में बच्चों के आकलन हेतु टेली-प्रेक्टीज एवं निक्लर एप्प का उपयोग करने हेतु बजट जारी किया जा रहा है। प्रत्येक शाला के शिक्षकों को इन दोनों एप्प का इस्तेमाल सीखना आवश्यक है। इस हेतु एन आई सी के माध्यम से आवश्यक प्रशिक्षण एवं हेल्प वीडियोज उपलब्ध करवाए जाएँगे। अपने शाला संकुल के प्रत्येक शाला में इन दोनों एप्प के नियमत उपयोग हेतु आवश्यक तैयारी एवं निर्देश देते हुए उपयोग की ट्रेकिंग करें। टेली-प्रेक्टीज का उपयोग बच्चे अपने घर पर पालकों के मोबाइल से उपयोग कर सकते हैं और निक्लर एप्प से शिक्षक कक्षा में अध्यापन के दौरान बहु-विकल्पीय प्रश्न पूछकर उसके उत्तरों के विश्लेषण के लिए कर सकते हैं। इन दोनों एप्प के इस्तेमाल करने से शिक्षकों का कक्षा में कार्य आसान हो जाता है। इन एप्प के इस्तेमाल हेतु शालाओं को ₹ 20/- प्रति छात्र के बजट का प्रावधान किया गया है।

9.9 बेसलाइन आकलन रिपोर्ट एवं उसके आधार पर फोलो-अप

कक्षा छठवीं से बारहवीं के मुख्य विषयों में बेसलाइन टेस्ट का आयोजन किया गया हैं। इस टेस्ट में प्रत्येक विषय में कुल पन्द्रह प्रश्न पूछे गए हैं। प्रत्येक प्रश्न किसी न किसी लर्निंग आउटकम का प्रतिनिधित्व करता है। प्रत्येक प्रश्नपत्र में तीन प्रकार के प्रश्नों का समावेश किया गया है- वास्तुनिष्ठ प्रश्न / लघु उत्तरीय प्रश्न एवं दीर्घ उत्तरीय प्रश्न। वास्तुनिष्ठ प्रश्नों के लिए एक अंक, लघु उत्तरीय के लिए चार अंक एवं दीर्घ उत्तरीय के लिए सात अंक निर्धारित करते हुए कुल पचास अंक के प्रश्न पत्र उपलब्ध करवाए गए थे। उत्तरों की जाँच दूसरे संकुलों में की गयी थी और ओ एम् आर शीट में बच्चों के उत्तरों एवं अन्य कुछ बिन्दुओं की प्रविष्टि की गयी थी।

आपको अपने शाला संकुल की शालाओं में बेसलाइन आकलन की रिपोर्ट के आधार पर प्रत्येक शाला को मिले एक मुद्रित फर्द का अध्ययन करना होगा। इस फर्द के आधार पर आपको निम्नलिखित मुद्दों पर आंकड़ों का विश्लेषण कर स्थिति में सुधार के लिए कार्ययोजना बनानी होगी-

1. शालाओं में कुल दर्ज संख्या - बालक बालिका
2. शालाओं से बेसलाइन में कुल स्थिति - बालक बालिका
3. शालावार कक्षावार विषयवार उपलब्धि - बालक बालिका
4. प्रश्नवार / दक्षतावार बच्चों की उपलब्धि
5. कठिनाई के क्रम में दक्षताओं की स्थिति
6. ऐसे बच्चों का विवरण जिनके हस्तलेख सुधारे जाने की आवश्यकता है
7. प्रत्येक प्रश्न पर बच्चों का सीखने का स्तर
8. शुरुआती स्तर वाले बच्चों की संख्या एवं प्रतिशत
9. कक्षा से निचले स्तर के बच्चो की संख्या एवं प्रतिशत
10. कक्षा के स्तर के अनुरूप बच्चों की संख्या एवं प्रतिशत
11. बच्चों द्वारा प्राप्त स्कोर
12. औसत स्कोर
13. प्रत्येक लर्निंग आउटकम के आधार पर औसत स्कोर
14. ऐसे स्कूलों का विवरण- संख्या एवं प्रतिशत (कारण सहित) जिन्होंने स्कूल में टेस्ट में गलत अभ्यास (malpractice) करवाया-
    i. बच्चों ने एक दूसरे से नक़ल करने का प्रयास किया है - %
    ii. शिक्षक ने श्यामपट पर उत्तर लिखकर दिया है - %
    iii. उत्तर पुस्तिकाओं में हस्तलेख एक जैसे हैं - %
15. शाला संकुलों में प्राप्तांकों के आधार पर शालाओं की रैंकिंग

उपरोक्त बिन्दुओं के आधार पर शालाओं में आयोजित होने वाले एंडलाइन परीक्षण में बेहतर प्रदर्शन के लिए भी पूरी तैयारी कर लेवें। बेसलाइन परीक्षण में बच्चों की उपस्थिति, परीक्षा केन्द्रों में आकलन, प्राप्त डाटा की ओ एम आर शीट में प्रविष्टि से संबंधित विभिन्न पहलुओं का अच्छे से अध्ययन कर लेवें। सभी हितग्राहियों से इस संबंध में आवश्यक बिन्दुओं पर फीडबैक लेते हुए एंडलाइन आकलन के प्रबन्धन में सुधार हेतु सभी आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित करें। बेसलाइन से एंडलाइन में प्रत्येक बच्चे का स्कोर पूर्व की तुलना में बढना चाहिए ताकि इस पूरे कार्यक्रम का लाभ बच्चों की उपलब्धि में सुधार के रूप में सामने प्रत्यक्ष दिखाई दे सके।

9.10 कक्षागत प्रक्रियाओं में सुधार

उपचारात्मक शिक्षण में कक्षागत प्रक्रियाओं में आवश्यक परिवर्तन आवश्यक है। बेहतर प्रभाविता के लिए हमारी कक्षाओं में निम्नलिखित सुधारात्मक कार्यों को किए जाने की आवश्यकता है-

i. क्लोज़ टेस्ट (Cloze test)

इसमें किसी एक पैराग्राफ का चयन कर उसे श्यामपट पर लिखा या अभ्यास के लिए दिया जा सकता है । लिखते समय कुछ महत्वपूर्ण जानकारियों को गायब कर उसकी जगह खाली स्थान रखा जाता है । पूरे वाक्य को पढकर बच्चों को सोच समझकर उन खाली स्थानों में उचित शब्द लिखने के लिए चयन करना पडता है । समय समय पर ऐसे क्लोज़ टेस्ट देने से बच्चों में सोचने एवं तार्किक क्षमता का विकास होता है और वे सक्रिय रहते हैं।

ii. Wh - टेम्पलेट (Wh-template)

आमतौर पर बच्चे कक्षा में अपनी शंकाओं के समाधान के लिए शिक्षकों से प्रश्न पूछने से डरते हैं। ऐसे शिक्षक जिनकी अपने विषय में कमजोर पकड रहती है तो वे भी कभी यह नहीं चाहते कि उनकी कक्षा के बच्चे उनसे प्रश्न पूछें। आपको अपनी कक्षा में बच्चों को प्रश्न पूछने हेतु पूरी आजादी और प्रोत्साहन देना चाहिए। यदि बच्चों को विभिन्न प्रकार के Wh प्रश्न मालूम हो तो किसी मुद्दे पर इन प्रश्नों के जवाब देते हुए वो उस मुद्दे से संबंधित सभी जानकारी एकत्रित कर सकता है । यदि हम अपनी कक्षा के एक कोने में इस प्रकार का Wh - टेम्पलेट तैयार कर सकें तो बच्चे उसे देखते हुए दिए गए मुद्दों पर अपने जिज्ञासाओं को शांत कर सकते हैं -Wh प्रश्न- What/ where/ why/ who/ how/ whose/ when etc.

iii. सारांशीकरण (Summarization)

इसमें किसी एक पाठ या पैराग्राफ को बच्चों को पढने के लिए देकर फिर उनसे उस हिस्से का सारांश लिखने के लिए कहा जा सकता है। इससे बच्चों को किसी अंश को पढकर फिर उसके महत्वपूर्ण अंशों को बिना भूले सारांश लिखने का अभ्यास हो जाता है। इस कौशल के माध्यम से वे चीजों को अतिशीघ्र ग्रहण कर उसके गूढ को समझ सकेंगे और चीजें उन्हें तत्काल याद रहेंगी ।

iv. पाठ के आधार पर प्रश्न (Document Based Questions)

DBQ में किसी एक पाठ या पैराग्राफ को बच्चों को पढने के लिए देकर फिर उनसे कुछ प्रश्नों के उत्तर देने के लिए कहा जाता है। बच्चे पाठ पढते समय महत्वपूर्ण बिन्दुओं को नोट बना सकते हैं। पाठ पढने के बाद उन्हें प्रश्न देते हुए बिना पुस्तक की मदद के उनसे उन प्रश्नों के जवाब लेने की कोशिश करें। जवाब देते समय वे अपने नोट्स की मदद ले सकते हैं। बच्चों को इस पूरे कार्य के लिए निर्धारित समय दें और इसके भीतर उनके लिए निर्धारित कार्य पूरा करने को कहें

V. माइण्ड मैप (Mind-Map)

माइण्ड मैप के माध्यम से बच्चों को कुछ चीजों को बडी आसानी से याद करने में सहयोग मिलता है। बच्चे कुछ कॉंसेप्ट्स को किसी कागज पर अपनी सुविधा के अनुसार एक नक्शे के रूप में तैयार करते हैं और इन्हें ऐसी जगह पर लगाकर रखते हैं जहाँ से इन्हें समय समय पर बडी आसानी से देखा जा सके। बार बार देखने से बच्चों के दिमाग में उस कॉंसेप्ट का एक दिमागी नक्शा बन जाता है। माइण्ड मैप बिलकुल व्यक्तिगत मामला होता है। परंतु इसमें एक महत्वपूर्ण कदम यह होता है कि इस माइण्ड मैप के आधार पर पुनः उन कोंसेप्ट को विस्तार से वर्णन किया जा सके । इसके समुचित अभ्यास से बच्चों को किसी प्रश्न के उत्तर याद करने या प्रस्तुत करने में कोई परेशानी नहीं होती और मात्र एक दिमागी नक्शे के आधार पर किसी प्रश्न का उत्तर विस्तार से दिया जा सकता है।

माइण्ड मैप बनाने में ज्यादा समय नहीं लगाना चाहिए और उसे सजाने सँवारने में समय व्यर्थ गँवाने के बदले इन माइण्ड मैप से कैसे चीजों को समझते हुए विभिन्न बिन्दुओं को प्रकट कर सकना और बाद में उसे विस्तारित कर सकने की क्षमता बच्चों में विकसित की जानी चाहिए ।

vi. क्विज़ (Quiz)

समय समय पर कुछ विशेष क्षेत्र निर्धारित कर बच्चों को क्विज़ कार्यक्रम का आयोजन कर तैयारी करवाई जा सकती है । गणित, विज्ञान एवं अन्य किसी भी विषय पर बच्चों को क्विज़ कार्यक्रम में सहभागी बनाया जा सकता है । बच्चों के समूहों को भी प्रश्न आदि ढूँढने एवं क्विज़ कार्यक्रम करवाने के लिए आगे लाते हुए प्रोत्साहित किया जा सकता है । इसे नियमित रूप से न केवल अपनी कक्षाओं में वरन अपने आसपास की शालाओं, संकुल एवं ब्लॉक स्तर पर भी करवाया जाना चाहिए । गणित में बच्चों व्दारा पहाडा प्रतियोगिताएँ भी करवाई जानी चाहिए और इस पर जिले स्तर तक बच्चों को शामिल कर अधिक से अधिक पहाडा जानने वाले बच्चों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए जिससे पहाडा आदि सीखने हेतु बच्चों में रुचि पैदा की जा सके ।

vi. अंत्याक्षरी

इसमें बच्चों को उनकी रुचि के अनुरूप भाषा या अन्य विषयों पर खेलने के लिए अवसर दिए जा सकते हैं । अंग्रेजी में नए नए शब्द को पुनः याद करने, दोहराने में अंत्याक्षरी बहुत ही मददगार हो सकती है । इसी प्रकार विज्ञान एवं अन्य विषयों में भी अलग अलग तरीकों से अंत्याक्षरी का इस्तेमाल किया जा सकता है। विभिन्न विषयों में अंत्याक्षरी खेलने के लिए बच्चों में क्रिएटिविटी का होना आवश्यक है । रचनात्मकता होने पर वे इस खेल को रुचिकर बनाते हुए सीखना एक रोचक अनुभव बना सकते हैं ।

vii. वाद-विवाद (Debate)

समय समय पर कुछ उपयोगी मुद्दों पर बच्चों को वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में सहभागिता करवाई जा सकती है । इस प्रकार के कार्यक्रमों में तैयारी करते करते बच्चे संबंधित बिन्दुओं पर काफी तैयारी कर लेते हैं

viii. दस -दो प्रविधि (Ten-two strategy)

किसी बिन्दु पर लगभग दस मिनट तक व्याख्यान देवें और उसके बाद दो मिनट का ब्रेक देकर सभी बच्चों को दस मिनट में बताए गए बातों को सोचने और उस पर शंका समाधान एवं एक दूसरे को चर्चा कर समझाने हेतु उचित अवसर प्रदान करें ।

ix. निर्माणवाद (Constructivism)

सक्रिय पाठशाला में अध्ययन-अध्यापन के लिए निर्माणवाद का उपयोग किया जाना होगा । इस वाद में ध्यान देने योग्य बातें निम्नलिखित हैं:

- सीखना तब होता है जब बच्चे सक्रिय रूप से सीखने की पूरी प्रक्रिया से जुडे हों और उसका अर्थ और ज्ञान का सृजन स्वयं कर रहे हों
- केवल चुपचाप बैठकर सुनना और सूचनाओं को ग्रहण करना ही सीखना नहीं होता
- सीखने वाले ही किसी चीज का अर्थ और knowledge बनाने वाले होते हैं
- सीखने की जिम्मेदारी बच्चों पर
- प्रश्न पूछने/ शंका समाधान को बढावा दें
- नए आइडियाज़ और अनुभव खोजें
- बच्चों की अपनी सोच को विकसित करने में सहायता करें

- एक दूसरे के साथ मिलकर जिम्मेदारियों को बाँटें
- विभिन्न विषयों को आपस में जोडें
- निर्णय लेने और critical thinking को प्रोत्साहित करें
- बच्चों की स्वतंत्रता को ध्यान दें Autonomy

X. एक दूसरे से सीखने हेतु विभिन्न प्रणालियाँ (Peer Learning)

a. सीखने के स्टेशन (Learning Station)

बच्चों को एक दूसरे से सीखने के अवसर प्रदान करने का एक सरल तरीका सीखने के स्टेशन वाली प्रणाली है । इसमें आवश्यकतानुसार बच्चों को 4 से 6 या अधिक समूह में बांटा जाता है । एक एक समूह को एक एक स्टेशन के रूप में संबोधित किया जाता है । प्रत्येक लर्निंग स्टेशन को किसी प्रकरण का एक हिस्सा दिया जाता है। इस प्रकार किसी प्रकरण में जितने हिस्से बन सके, उतने लर्निंग स्टेशन बनाना बेहतर होता है । एक मुद्दे पर काम करने के लिए एक निश्चित समय निर्धारित करने के बाद सभी समूह को एक एक स्टेशन आगे बढते हुए अगले हिस्से पर काम करने को कहा जाता है। इस प्रकार धीरे धीरे आगे बढते हुए पूरी कक्षा उस प्रकरण के समस्त हिस्से पर अपनी समझ बना लेती है । शिक्षक लर्निंग स्टेशन के लिए आवश्यक संसाधन और आवश्यकता पडने पर मार्गदर्शन देने का कार्य करता है ।

b. जिगसॉ (Jigsaw)

यह एक दूसरे से सीखने के लिए एक बहुत ही प्रभावी तकनीक है । इसमें प्रक्रिया निम्नानुसार होती है:

- लर्निंग स्टेशन की भांति आवश्यकतानुसार बच्चों को अलग अलग समूह में बिठाया जाता है ।
- प्रत्येक समूह को किसी एक प्रकरण या मुद्दे पर काम करने को कहा जाता है ।
- उस प्रकरण पर उस समूह के प्रत्येक सदस्य को कार्य करने के लिए आवश्यक सहयोग एवं मार्गदर्शन दिया जाता है ताकि प्रत्येक सदस्य उस मुद्दे पर अपनी मास्टरी हासिल कर सके ।
- अब एक नया समूह बनाया जाता है । इस समूह में प्रत्येक मुद्दे पर मास्टरी हासिल किए हुए एक एक सदस्य होते हैं ।
- अब इस समूह में प्रत्येक सदस्य अपने समूह के अन्य सदस्यों को अपने अपने पूर्व के समूह में मास्टरी हासिल किए गए मुद्दे से संबंधित बातों को सिखाता है । इस प्रकार इस छोटे समूह में प्रत्येक सदस्य एक दूसरे को अपनी सीखी हुई बात को सिखाता है ।
- ऐसे में एक ही समय में बहुत सारे बच्चे अपने अपने समूह में अपने सहपाठियों को नवीन चीजें सिखाने का प्रयास करते हैं । इससे न केवल समय की बचत होती है वरन छोटे समूह में सीखना भी बेहतर ढंग़ से हो पाता है।

जैसा कि नाम से विदित है इसमें पहले अलग अलग समूह बनते हैं और बाद में ये समूह एक होकर किसी नए ज्ञान का सृजन करते हैं और इस प्रकार पहेली संपन्न होती है ।

विभिन्न प्रकरणों को पढाते समय हम इन दोनों में से किसी एक या दोनों का भी इस्तेमाल कर सकते हैं ।इनके उपयोग से बच्चे बहुत अधिक सक्रिय हो जाते हैं और एक दूसरे को सिखाते हैं। यही सक्रिय रहकर सीखने का मूलमंत्र भी है कि जब कोई चीज किसी अन्य को सिखाई जाए तो वो ज्यादा बेहतर ढंग से सीखी जा सकती है और उस पर आपकी मास्टरी हासिल हो जाती है ।

राज्य में कोरोना के बाद हुए लर्निंग लोस को कम करने हेतु उपरोक्त सभी बिन्दुओं पर विशेष ध्यान देते हुए मिशन लर्निंग आउटकम कम्पलीशन कार्यक्रम का आयोजन किया जाना होगा। शाला संकुल प्राचार्य के रूप में आपको

उपरोक्त सभी बिन्दुओं पर पूरे गुणवत्ता के साथ कार्य करना अनिवार्य होगा। इस कार्यक्रम आमीन उपलब्ध बजट का आपको समय पर अर्थात इस वर्ष मार्च के पहले उपयोग कर लेना होगा अन्यथा पी ऍफ़ एम् एस के होने से वह राशि लैप्स हो जाएगी। उपरोक्त सभी बिंदु कोरोना से हुए नुकसान की क्षतिपूर्ति को ध्यान में रखकर बनाए गए हैं परन्तु इनमें से अधिकांश को आप आगे भी नियमित रूप से अपने संकुल की शालाओं में बच्चों की उपलब्धि में सुधार हेतु उपयोग में ला सकते हैं।

आप अपने शाला संकुल में मिशन लर्निंग आउटकम कम्पलीशन के अनुरूप निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए क्या करेंगे? इस कार्यक्रम में सुधार के लिए आपके क्या सुझाव हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

10. शाला संकुल के माध्यम से निरीक्षण हेतु टिप्स

शाला संकुल के भीतर सीमित संख्या में स्कूल एवं शाला संकुल का दायरा भी बहुत सीमित होने की वजह से यह अपेक्षा की जाती है कि शाला संकुल व्यवस्था के माध्यम से अकादमिक निरीक्षण का कार्य बहुत अच्छे और व्यवस्थित तरीके से हो सकेगा। एक शाला संकुल के भीतर औसत रूप से पांच से नौ तक की संख्या में स्कूल होते हैं। इन स्कूलों के निरीक्षण के लिए पूर्व से ही जिला एवं विकासखंड स्तर से विभिन्न अधिकारियों के साथ-साथ अब इस नई व्यवस्था में शाला संकुल प्राचार्य, उनकी शाला के विषय शिक्षक, संकुल स्रोत समन्वयक एवं शाला प्रबन्धन समिति के सदस्य भी जुड़ रहे हैं। कोरोना के बाद स्कूली शिक्षा में टेक्नोलोजी का भी व्यापक स्तर पर उपयोग होने लगा है। एक संकुल प्राचार्य के नाते आप मॉनीटरिंग एवं निरीक्षण के लिए नीचे दी हुई कुछ युक्तियों को अपना सकते हैं -

I. वर्चुअल निरीक्षण

वीडियो काल के माध्यम से आप सीधे स्कूल से जुड़कर परिसर का अवलोकन, कक्षाओं का अवलोकन, सीखने-सिखाने की गतिविधियों का अवलोकन, बच्चों एवं शिक्षकों के साथ संवाद एवं शाला प्रबन्धन समिति से भी बातचीत कर सकते हैं। इससे समय एवं धन की बचत होती है और आप लंबा समय लेकर स्कूल के विभिन्न पहलुओं को बारीकी से चेक कर सकते हैं

II. मासिक बैठक (आनलाइन/ आफलाइन)

संकुल स्तर पर आयोजित होने वाले मासिक बैठकों को आप Online/ offline mode में लेकर विभिन्न मुद्दों पर आसानी से एक ही जगह में बैठकर सभी शालाओं की समीक्षा कर सकते हैं। मासिक बैठकों में सभी शालाओं से प्रतिनिधित्व रहता है। इन बैठकों में मुख्यतः अकादमिक चर्चाओं के लिए चर्चा पत्र के दस एजेंडा पर चर्चा आयोजित की जाती है। इस बैठक में उपस्थित होने से शाला संकुल प्राचार्य को अपने संकुल की बहुत सी जानकारी मिल जाती है। इसलिए प्रतिमाह ऐसी बैठकों में उपस्थित होकर जमीनी वास्तविकताओं को जाना जा सकता है

III. विद्यार्थी विकास सूचकांक

किसी भी कक्षा में बच्चों की विभिन्न लर्निंग आउटकम में स्थिति देखनी हो तो एक आसान तरीका होता है- विद्यार्थी विकास सूचकांक। यदि आप प्रत्येक कक्षा में शिक्षकों को विद्यार्थी विकास सूचकांक प्रदर्शित करने के निर्देश देते हुए उसका पालन करवाते हैं तो यह एक बहुत ही आसान टूल होता है कक्षा में बच्चों की स्थिति की जानकारी लेने का। चार्ट में विद्यार्थी विकास सूचकांक को प्रदर्शित करने हेतु एक तरफ ऊपर से नीचे विद्यार्थियों के नाम एवं दूसरी तरफ बाएँ से दायें कुछ चयनित लर्निंग आउटकम लिखे होते हैं। जिन बच्चों ने उन लर्निंग आउटकम को प्राप्त कर लिया, उनके नाम के सम्मुख और उस लर्निंग आउटकम के नीचे टिक कर दिया जाता है। निरीक्षणकर्ता को केवल उन लोगों से क्रोस-चेक करना होता है जिनके नाम के सम्मुख टिक लगा है। बाकी के लिए तो शिक्षक स्वयं मान रहे हैं कि उन्होंने निर्धारित लर्निंग आउटकम प्राप्त नहीं किया है

IV. गूगल फार्म

गूगल फॉर्म एक आसान टूल है जिसके माध्यम से हम विभिन्न प्रश्नों के माध्यम से विभिन्न जानकारियों को कई स्रोतों से एक बार में ही भेजकर प्राप्त कर सकते हैं। प्राप्त जानकारियों को एक साथ संकलित करना एवं विश्लेषण करना आसान होता है। इसमें सामने वाले को एक लिंक प्राप्त होता है जिसे खोलने पर एक के बाद एक प्रश्न आते जाते हैं जिसका जवाब देना होता है। ये जवाब एक्सेल शीत में एकत्र हो जाते हैं जिसे डाउनलोड कर आसानी से उपयोग में लाया जा सकता है

V. APP के माध्यम से प्रविष्टि

विभिन्न मुद्दों से संबंधित निरीक्षण कार्य हेतु कुछ एप्प बनाकर उसका उपयोग भी कार्य को आसान बनाने हेतु किया जा सकता है। अभी हम विशेष कोचिंग कक्षाओं के निरीक्षण के लिए एक एप्प बनाकर उसे गूगल प्ले स्टोर में डाला हुआ है। इस एप्प में इन कोचिंग कक्षाओं में जाकर निरीक्षण करते हुए कुछ जानकारियों के साथ-साथ कोचिंग का लाभ ले रहे बच्चों के फोटोग्राफ भी भेजे जा सकते हैं

VI. स्कूल पेयरिंग या ट्विनिंग ऑफ़ स्कूल

ट्विनिंग ऑफ़ स्कूल कार्यक्रम के अंतर्गत दो स्कूलों को एक दूसरे से जोड़ी बना दी जाती है। ये दोनों स्कूल आपस में जोड़ी बनाकर एक दूसरे का सहयोग करते हैं और एक दूसरे के स्कूलों में सुधार हेतु आवश्यक सुझाव भी देते हुए आगे बढाते हैं। इस प्रकार पेयरिंग किए जाने वाले स्कूल संसाधनों की साझेदारी भी की जाती है

VII. शाला अवलोकन (पारंपरिक निरीक्षण)

शालाओं का परंपरागत निरीक्षण हेतु किसी शाला में पूर्व से सूचित कर या बिना सूचित किए अचानक पहुंच कर किया जाता है। शाला में विभिन्न दस्तावेजों एवं योजनाओं के क्रियान्वयन की स्थिति के साथ-साथ बच्चों की उपलब्धि का आकलन कर शाला के शिक्षकों एवं प्रधानपाठकों को अपनी राय से अवगत करवाया जाता है।

VIII. टेलीग्राम ग्रुप में चर्चा एवं सर्वे

संकुल के सभी शिक्षकों का एक टेलीग्राम ग्रुप बनाकर उसमें सभी को सक्रिय रखते हुए उस ग्रूप के माध्यम से विभिन्न शिक्षकों एवं शालाओं द्वारा किये जा रहे विभिन्न कार्यों की जानकारी ली जा सकती है। टेलीग्राम ग्रुप के माध्यम से विभिन्न मुद्दों पर सर्वे भी आयोजित किया जा सकता है।

IX. सामाजिक अंकेक्षण

शाला संकुल के सभी स्कूलों में गठित शाला प्रबंन्धन समिति के माध्यम से समय समय पर स्कूल का सामाजिक अंकेक्षण किया जा सकता है। इस अंकेक्षण की रिपोर्ट के आधार पर आपको स्कूलों में अध्ययन-अध्यापन की स्थिति एवं समुदाय की संतुष्टि का पता लग सकता है। इस हेतु आपको एक टूल बनाकर देना होगा।

X. मासिक चर्चा पत्र

आप संकुल के सभी शिक्षकों को अपने अपने मोबाइल में cgschool.in से चर्चा पत्र को डाउनलोड कर उसका अध्ययन करने हेतु निर्देशित करें। संकुल की बैठक में दस एजेंडा को दस अलग अलग शिक्षकों को समझाने हेतु कहें। केवल वे ही शिक्षक ठीक से समझा पाएँगे जिन्होंने बैठक में आने से पूर्व चर्चा पत्र के सभी एजेंडा का अच्छे से अध्ययन किया हो। ऐसा करके आप संकुल समन्वयक के कार्य को हल्का कर सकते हैं और शिक्षकों को स्व-अध्ययन के लिए प्रेरित भी कर सकते हैं।

इसके अलावा चर्चा पत्र पढने अथवा पोडकास्ट के माध्यम से सुनने के आधार पर कितने साथियों नें अपनी अपनी शाला में उन दस एजेंडाओं पर कार्य किया, यह भी जानना अत्यंत आवश्यक है। इस हेतु शिक्षकों को उनके द्वारा किए गए कार्यों के वीडियो बनाकर आपके ग्रुप में साक्ष्य के रूप में भेजने हेतु निर्देशित करें। इनमें से बेस्ट वीडियोज को आप चर्चा पत्र टीवी के लिए भेज सकते हैं।

इस तरह से जमीनी वास्तविकताओं को जानने हेतु समय समय पर विभिन्न तकनीकों का उपयोग कर हम शाला संकुल के माध्यम से शालाओं का निरीक्षण कर सकते हैं

अपने शाला संकुल के शालाओं के निरीक्षण के दौरान आपने मुख्य रूप से कौन कौन सी अकादमिक समस्याएं देखी और इन समस्याओं को दूर करने हेतु आपने क्या क्या उपाय अपने शाला संकुल में अपनाए ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

11. शाला संकुल में नवाचार के अवसर

11.1 कक्षाओं का आबंटन

शाला संकुल के भीतर की शालाओं में बच्चों के गुणवत्ता हासिल न करने की स्थिति के संबंध में एक दूसरे पर दोषारोपण की समस्या के हल के रूप में आप कक्षाओं के लिए जिम्मेदारी दिए जाने हेतु एक नई व्यवस्था के बारे में सोचकर उसका क्रियान्वयन अपने शाला संकुल में कर सकते हैं। इस व्यवस्था में यदि प्राथमिक स्तर पर दो शिक्षक हैं तो एक शिक्षक कक्षा पहली में तो दूसरा शिक्षक कक्षा दूसरी, फिर पहली वाला शिक्षक कक्षा तीसरी एवं दूसरी वाला शिक्षक कक्षा चौंथी में अध्यापन की जिम्मेदारी लेंगे। यही क्रम आगे चलता रहेगा। इसमें आपस में इस बात की स्पष्टता रहेगी कि एक कक्षा से दूसरी कक्षा में जाने के पूर्व उस कक्षा की सभी लर्निंग आउटकम को सभी विद्यार्थियों में समय पर हासिल हो जाना चाहिए अन्यथा उस शिक्षक को अलग से समय निकालकर ऐसे बच्चों के साथ काम कर उसे कक्षा अनुरूप तैयार कर अगली कक्षा में भेजना होगा।

11.2 मेहंदी से वर्णमाला सीखना

बच्चों को FLN के लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु स्कूलों में बच्चों के हाथ में मेंहदी से अलग अलग वर्णों को लिखकर उनके माध्यम से विभिन्न गतिविधि करवाई जा सकती हैं। जैसे वर्णों को बच्चे एक दूसरे के हाथ में देखकर उसे पढ़ें, वर्णों को खोजें, वर्णों को हाथ में देखकर नकल कर लिखें, अलग अलग वर्णों को अपने हाथ एक दूसरे के पास रखकर जोड़कर शब्द बनाकर दिखाएँ आदि आदि। ऐसा करके आप बहुत कम मेहनत कर बच्चों को वर्णमाला से परिचित करवा सकते हैं

11.3 मोबाइल शिक्षक

शाला संकुल की शालाओं में कुछ ऐसे शिक्षक आपको देखने को मिलेंगे जिनका लाभ आपको अन्य शालाओं में भी दिलवाना चाहिए। जैसे यदि कोई शिक्षक संगीत या खेल में विशेष प्रतिभा रखता है तो उन्हें अन्य शालाओं में भी भेजकर वहां के बच्चों को उनकी इस प्रतिभा का लाभ लेने का अवसर देने उन्हें मोबाइल शिक्षक के रूप में विभिन्न शालाओं में कार्य करने का अवसर देना चाहिए

11.4 मोबाइल पुस्तकालय

आप अपने संकुल की शालाओं के लिए कुछ अच्छी पुस्तकें लेने हेतु एक योजना बनाकर उन पुस्तकों में से कुछ कुछ भाग को अलग अलग शालाओं के माध्यम से उपलब्ध करवा सकते हैं। इन पुस्तकों को सभी शालाओं के बच्चों को पढने का अवसर देने हेतु इस प्रकार से उपलब्ध करवाई गयी पुस्तकों को एक मोबाइल पुस्तकालय के रूप में उपयोग में लाते हुए सभी को पढने का अवसर दे सकते हैं

11.5 स्थानीय सामग्री निर्माण

शाला संकुल में बच्चों द्वारा उपयोग में लाई जाने वाली विभिन्न भाषाओं का चयन कर उन भाषाओं के जानकार स्थानीय लोगों की पहचान कर उनके माध्यम से वर्णमाला चार्ट, वार्तालाप पुस्तिका, भाषा सेतु सहायिका, शब्दकोष एवं स्थानीय कहानियों का संकलन किया जा सकता है। स्थानीय स्तर पर कहानी उत्सव का आयोजन कर बड़े-बुजुर्गों से ऐसी कहानियों को एकत्रित किया जा सकता है। इन कहानियों को बड़े-बुजुर्गों से सुनकर बच्चों एवं शिक्षकों द्वारा इनका दस्तावेजीकरण करते हुए इन्हें व्यवस्थित एवं बाल कहानी संग्रह का रूप दिया जा सकता है जिसे शालाओं में मुस्कान पुस्तकालय में रखा जा सकता है। एक दूसरे की शालाओं में इस प्रकार तैयार सामग्री को आसपास की शालाओं में बच्चों के उपयोग हेतु साझा की जा सकती है

11.6 शाला संकुल स्तरीय अकादमिक संगोष्ठी

शाला संकुल प्राचार्य के रूप में आप अपने संकुल में कुछ सेमीनार एवं अकादमिक संगोष्ठी आदि का आयोजन भी कर सकते हैं। इस प्रकार के सेमीनार आदि के आयोजन के दौरान आप आसपास के अन्य शाला संकुलों से भी प्रतिभागियों को आमंत्रित कर सकते हैं। शाला संकुलों ऐसे आयोजनों के लिए कुछ सुझावात्मक मुद्दे इस प्रकार हैं-

- खेल खेल में गणित की शिक्षा कैसे दें
- बहु-बुद्धि पद्धति का इस्तेमाल कर बच्चों में छिपी प्रतिभा का विकास
- अधिगम विभिन्नताओं को कम करना- ठोस कार्ययोजना
- कक्षागत प्रक्रियाओं में पालकों को शामिल करने हेतु नवाचारी उपाय
- खाली पीरियड में बच्चों को सक्रिय रखने नवाचारी गतिविधियों का चयन
- विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता की समस्या- कैसे इस समस्या से निपटा जाए?
- अंग्रेजी अध्यापन में भाषाई खेल
- शिक्षक प्रशिक्षण के दौरान वातावरण निर्माण एवं सभी को सक्रिय रखने हेतु कुछ गतिविधियाँ
- कक्षा में सहायक शिक्षण सामग्री का निश्चित उपयोग और कुछ बहु-उद्देश्यीय सहायक सामग्री के उदाहरण
- स्थानीय स्तर पर FLN के लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए विभिन्न नवाचारी उपाय
- शाला प्रबन्धन समिति को अकादमिक सुधार हेतु सक्रिय करना
- सौ दिन सौ कहानियों के माध्यम से रीडिंग स्पीड बढ़ाना
- शिक्षकों द्वारा अकादमिक समस्याओं के निदान हेतु एक्शन रिसर्च
- सामुदायिक सहभागिता कैसे प्राप्त करें
- आंगनबाड़ियों में सीखना-सिखाना कैसे सुनिश्चित करें
- FLN के लिए तय मेंटर के माध्यम से FLN के लक्ष्यों को प्राप्त करने के उपाय

11.7 लर्निंग वाक

गोद लिए हुए शालाओं में संबंधित शिक्षक या शाला संकुल प्राचार्य द्वारा माह में कम से कम एक बार "Learning Walk" कार्यक्रम का आयोजन किया जाए। शाला परिसर में "Learning Walk" के दौरान शाला में सीखने-सिखाने के वातावरण, बच्चों को एक दूसरे से सीखने एवं विभिन्न प्रक्रियाओं में किस प्रकार के सुधार आदि की आवश्यकता है, की जानकारी लेते हुए संबंधित शिक्षकों को उन मुद्दों पर अगले "Learning Walk" के पूर्व सुधार के लिए प्रेरित करना होगा।

11.8 शाला अनुभव कार्यक्रम में लक्ष्यों का निर्धारण

अपने शाला संकुल की शालाओं में बी.एड./ डी.एड. विद्यार्थियों द्वारा शाला अनुभव कार्यक्रम में शामिल होने की स्थिति में उन शालाओं में इन विद्यार्थियों द्वारा बच्चों के साथ मूलभूत दक्षताओं के विकास की दिशा में जिम्मेदारी देते हुए शाला से भीतर एवं बाहर के बच्चों के साथ कार्य करने हेतु लक्ष्य देते हुए उनके द्वारा की जा रहे कार्यों की प्रभाविता की समय समय पर समीक्षा करना

11.9 विभिन्न लर्निंग आउटकम को प्रभावी ढंग से प्राप्त करने हेतु नवाचारी उपाय

शाला संकुल के शालाओं के शिक्षकों के मध्य एक प्रतियोगिता का आयोजन कर विभिन्न कठिन लर्निंग आउटकम को किस प्रकार से आसानी से पढ़ाया जा सकता है, उस पर प्रस्तुतीकरण एवं आलेख लेकर बेहतर उदाहरणों को संकलित कर एक पुस्तिका बनाकर सभी शालाओं में उपलब्ध करवाई जा सकती है। जिले स्तर पर सभी शाला संकुलों को अलग अलग कक्षा एवं विषय देकर ऐसी पुस्तिका बनवाकर संकलित की जा सकती है

Abbreviation

LIST OF Commonly used ABBREVIATIONS in Education	
ALM	Active Learning Method
B.Ed.	Bachelor in Education
BRC	Block Resource Centre
BRCC	Block Resource Centre Coordinator
CAC	Cluster Academic Coordinator
CAL	Computer Assisted Learning
CCE	Continuous & Comprehensive Evaluation
CGBSE	Chhattisgarh Board of Secondary Education
CRC	Cluster Resource Centre
CTE	College of Teacher Education
CWSN	Children with Special Needs
D.Ed.	Diploma in Education
DIET	District Institute of Education & Training
DPI	Directorate of Public Instructions
ECCE	Early Childhood & Care Education
ELTI	English Language Teaching Institute
HS	High School
HSS	Higher Secondary School
IASE	Institute of Advanced Studies in Education
ICT	Information & Communication Technology
IED	Inclusive Education of Disabled
KGBV	kasturba Gandhi Balika vidyalaya
M.Ed.	Master in Education
MDM	Mid-day meals
MGML	Multi Grade Multi level teaching
MLE	Multi-Lingual Education
NCERT	National council of Educational Research & Training
PRI	Panchayat Raj Institution
SCERT	State Council of Educational Research & Training
UEE	Universalization of Elementary Education
UPE	Universalization of PrimaryEducation
UPS	Upper Primary Education
USE	Universalization of Secondary Education
WB	World Bank

अपने शाला संकुल के भीतर की शालाओं में उपलब्ध संसाधनों के बेहतर उपयोग एवं साझेदारी हेतु "स्पाइडर वेब मोडल" का उपयोग

- अपने शाला संकुल के भीतर की शालाओं को विभिन्न क्षेत्रों में विशेषज्ञ स्कूलों के रूप में विकसित करें।
- शालाओं में विशेषज्ञता के क्षेत्रों का निर्धारण वहां के शिक्षकों की रुचि एवं कौशल के आधार पर निर्धारित करें।
- शाला संकुल की सभी शालाओं को ऐसे अलग अलग क्षेत्र में विकसित कर एक दूसरे से सहयोग एवं साझेदारी के लिए प्रेरित करें।
- इस प्रकार अपने शाला संकुल में "स्पाइडर वेब मोडल" के उपयोग को प्रोत्साहित करें।

आइडिया:

अपने शाला संकुल के भीतर की शालाओं में उपलब्ध संसाधनों की आपस में साझेदारी हेतु स्पाईडर वेब मोडल का उपयोग सुनिश्चित करना। इस मोडल में आपको अपने संकुल की अलग अलग शालाओं को अलग अलग क्षेत्र में विशेषज्ञता हासिल करवाए जाने हेतु विकसित किया जाना होगा। संकुल की एक शाला को भाषा में, एक को गणित में, एक को खेल में, एक को पुस्तकालय एक उपयोग में, एक को स्थानीय सामग्री विकसित कर उपयोग में, एक को सहायक सामग्री बनाने में, एक को आकलन में सुधार लाए जाने जैसे आवश्यकतानुसार विभिन्न कार्यों हेतु संकुल की अलग अलग शालाओं को वहां के शिक्षकों की रुचि एवं विशेषज्ञता के आधार पर विकसित कर इस प्रकार तैयार संसाधनों के उपयोग के लिए एक दूसरे क ऊपर निर्भरता एवं साझेदारी का कल्चर विकसित किया जाए